History of Western Philosophy, TDC Part-II - IV Paper

पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

सम्पूर्ण पाश्चात्य दर्शन को हम चार भागों में बांट कर देख सकते हैं– प्राचीन काल, मध्यकाल, आधुनिक काल और समकालीन।

प्राचीन काल– प्राचीन काल जिसे हम ग्रीक काल भी कहते हैं, सौन्दर्य और कला का युग माना जाता है। विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से ग्रीक सभ्यता भी एक है। ग्रीक दर्शन के साथ ही पाश्चात्य दर्शन का प्रारंभ होता है। प्राचीन काल का प्रारम्भ थेल्स (Thales) के विचारों से माना जाता है। थेल्स ही पहले दार्शनिक हैं जिन्होंने सर्वप्रथम घोषणा की कि विश्व की हर वस्तु की रचना जल से हुई है। एनैक्सिमेण्डर (Anaximendor) ने अनन्त के प्रत्यय को माना और कहा कि प्रकृति में कोई भेद नहीं है। मूल कारण एक है किन्तु कार्य में अनेकता है। इस तरह एक और अनेक को मान्यता दी। एनैक्सिमेंडर के पश्चात् एनैक्सिमेनिज (Anaximenies) ने थेल्स का अनुकरण करते हुए वायु को जगत् की उत्पत्ति माना। पाइथेगोरस (Pythegoras) ने संख्या को विश्व का मूल तत्त्व बताया। पार्मेनाइडिज ने जीनोफ़ेनीज के कथन 'सब कुछ एक है' को अपने विचारों का आधार बनाया और एकता से आरम्भ कर अनेकता की ओर अपने को अग्रसर किया। तत्पश्चात् हेरेक्लाइटस (Heraclitus) ने अग्नि को मूल तत्त्व माना और कहा कि अग्नि जल और वायु दोनों से बलिष्ठ है। द्यौलोक तो अग्नि का प्रकट रूप है और पृथ्वी पर सारा चमत्कार अग्नि का ही है। अग्नि ही विश्व का मूल तत्त्व है। ल्युसिप्पस और डेमोक्राइटस ने मूल तत्त्व के रूप ने परमाणु को माना और कहा कि यह नित्य है, ठोस है तथा परमाणुओं के योग से सारे पदार्थ बनते हैं। परमाणुवादियों की भाँति एनैक्सेगोरस (Anaxagoras) भी पदार्थों की उत्पत्ति परमाणुओं का संयोग मानते हैं।

प्रोटागोरस (Protagoras) एक ऐसे दार्शनिक हुए जहाँ से दर्शन ने नया मोड़ लिया। प्रोटागोरस ने मनुष्य को सभी चीजों का मापदण्ड माना और कहा कि जो कुछ है, उसके अस्तित्व के सम्बन्ध में और जो नहीं है उसके अभाव के सम्बन्ध में वही निश्चय करता है। सुकरात ने कहा कि सदाचार सत्य ज्ञान ही है। उन्होंने सदाचार और ज्ञान को एक ही माना। इसके बाद प्लेटो (Plato) का नाम आता है जो सुकरात के बहुत बड़े भक्त थे और उन्हें जो कुछ कहना था, वह सुकरात की जिह्वा से कहलवाए। यही कारण है कि हम सुकरात और प्लेटो के विचारों को मिला जुला पाते हैं। ग्रीक दर्शन को

चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने का श्रेय प्लेटो को ही जाता है जिसके लिए उन्हें पूर्ण ग्रीक की उपाधि से विभूषित किया जाता है। ग्रीक दर्शन के इतिहास में प्लेटो ही प्रथम दार्शनिक हैं जिन्होंने एक ऐसे सर्वतोमुखी और परिपूर्ण दर्शन की स्थापना का प्रयास किया जो दर्शन के सभी पक्षों, जैसे- मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र आदि विषयों की समुचित व्याख्या एवं तत्सम्बन्धी समस्याओं का संतोषजनक समाधान भी प्रस्तुत किया। अरस्तू (Aristotle) का दर्शन प्लेटो के ही दर्शन का एक विकसित रूप है। चूँकि अरस्तू प्लेटो के शिष्य थे अतः उनमें समानता का होना अनिवार्य है। परन्तु अरस्तू ने अपने तत्त्व विचार का शुभारम्भ प्लेटो के प्रत्यक्षवाद की आलोचना से किया है।

मध्यकाल- मध्यकाल धर्मप्रधान माना जाता है। इस युग में दर्शन धर्म का दास बन गया था, क्योंकि मध्ययुग के दार्शनिक प्रायः कैथोलिक पादरी ही थे जिनका मुख्य उद्देश्य धार्मिक सिद्धान्तों को तर्क द्वारा प्रकट करना था। एक तरह से इसे इसाई युग कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा कारण कि यह युग इसाई धर्म के उदय एवं विकास का युग था। पोप- पादरी ही जगत् के मसीहा कहे जाने लगे थे। उनका कथन ही सत्य माना जाने लगा था। सभी दार्शनिक विचारों को धर्म की चादर ओढ़ाकर लोगों के सामने व्यक्त किया जा रहा था। यह काल पांचवीं शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक माना जाता है। दर्शन के इतिहास में इस काल को अंधकार का युग कहा गया है। वस्तुतः यह काल चर्च के प्रभुत्व से दबा था जिसका अन्त सुधारक प्रवृत्तियों से हुआ। इस काल के प्रमुख दार्शनिकों में प्रथम नाम सन्त ऑगस्टाइन (Saint Augustine) का आता है। उनके बाद के दार्शनिकों के नाम हैं- जान स्कॉटस (Jahn Scotus), सन्त एनसेल्म (Sain Anselm), सन्त थॉमस एक्विनस (Sain Thomas Aquinas), विलियम ओखम (William Occaom) आदि।

आधुनिक काल- आधुनिक काल १५वीं शताब्दी से लेकर १९वीं शताब्दी तक माना जाता है। ऐसे आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के जनक के रूप में रेने देकार्त का नाम आता है किन्तु आधुनिक युग का सूत्रपात कुसा निवासी निकोलस (Nicolas) के समय ही हो गया था। निकोलस का समय ई. सन् १४०१ से ई. सन् १४६४ माना जाता है जबकि रेने देकार्त का समय १५९६-१६५० ई. सन् माना जाता है। इस युग के दार्शनिकों में रेने देकार्त (Rene Descartes), बेनेडिक्टस स्पिनोजा (Benedictus Spinoza), गॉडफ्रिड विल्हेल्म लाइब्निट्ज (Gottfried Wilhelm Leibnitz), जॉन लॉक (Jahn Lock), जॉर्ज बर्कले (George Berkeley), डेविड ह्यूम (David Hume), इमैनुएल काण्ट (Immanuel Kant), फिख्ते (Fichte) तथा जॉर्ज विहेल्म फ्रेडरिक हेगेल (George Wilhelm Friedrich Hegel) आदि के नाम आते हैं।

प्राचीन काल कला एवं सौन्दर्य का काल था जिसका मुख्य उद्देश्य सत्यं, शिवं, सुन्दरमं की अनुभूति था। मध्ययुग धार्मिक युग कहलाता था किन्तु आधुनिक युग इन सबसे भिन्न स्वातंत्र्य का युग है, धार्मिक परम्परा और प्रभुत्व का युग है, निष्पक्ष

एवं स्वतंत्र आन्दोलन का युग है। भौतिक विज्ञान के प्रबल अभ्युदय का युग है, समाज एवं संस्कृति और कला के पुनरुत्थान तथा प्रगतिशील जनजागरण का युग है।

समकालीन– इस काल के विचारकों में सॉपनेहर (Schopenhauer) काम्ते (Comte), मिल (Mill), स्पेन्सर (Spencer), नित्शे (Nietysche), ब्रेडले (Bradley), जेम्स बर्गसॉ (James Bergson) जॉन डिवी (John Dewey), एलेक्जेण्डर (Alexander), ह्वाइटहेड (Whitehead), मूर (Moore), विटगेंस्टाइन (Wittgenstein), सार्त्र (Sartre), एयर (Ayer) आदि के नाम आते हैं।

नोटः

पाश्चात्य दार्शन के इतिहास में हमलोगों को आधुनिक दर्शन पढ़ना है जिसके अन्तर्गत निम्न दार्शनिकों को पढ़ना है–

देकार्त (Rene Descartes), बेनेडिक्टस स्पिनोजा (Benedictus Spinoza), गॉडफ्रिड विल्हेल्म लाइब्नित्ज (Gottfried Wilhelm Leibnitz), जॉन लॉक (Jahn Lock), जॉर्ज बर्कले (Berkeley), डेविड ह्यूम (David Hume), इमैनुएल काण्ट (Immanuel Kant)।

अगले व्याख्यान में बुद्धिवाद और अनुभववाद पर प्रकाश डाला जाएगा।